मध्यप्रदेश शासन

मान. मुख्यमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान

का

'ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट' इन्दौर के लिये संबोधन

26 अक्टूबर, 2007

- मित्रों, मध्यप्रदेश में आपका स्वागत है। उस प्रदेश में जो अपनी तरह से कास्मोपोलिटन है, उस प्रदेश में जो स्वयं में एक **मेल्टिंग पॉट** है, आप देश दुनिया के कोने कोने से आकर इकट्ठे हुए हैं। आज मुझे लगता है कि मध्यप्रदेश का मध्य में होना सार्थक हो गया है।
  देखा जाए तो **यथा नाम तथा काम** के सिद्धान्त के अनुसार तो मध्यप्रदेश को औद्योगिक गतिविधियों के बीच में ही होना था। लेकिन यह पड़ा हुआ था हाशिए पर। मार्जिन्स पर। आज मुझे लगता है कि यह दिन मध्यप्रदेश के लिए अपनी **नियति से मुलाकात** का दिन है। आज यह प्रदेश आप सबके ध्यान के केन्द्र में है।
- यह अनायास और आकस्मिक रूप से नहीं हो गया। पिछले डेढ़ सालों में देश और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में जाकर इस राज्य के प्रति उत्सुकता जगाने और उन उत्सुकताओं को विश्वसनीय तरीके से रिप्लाई करने की कोशिश सरकार ने की है। मैं सिंगापुर मलेशिया गया था। मैंने देखा कि मलेशियन कंपनियां यूरोप या संयुक्त राज्य अमेरिका में निवेश नहीं कर रही हैं, वे अफ्रीकन देशों में निवेश कर रही हैं। क्योंकि वे ऐसे हाई-पोटेन्शियल देश हैं जहां वे अपनी

विशेषज्ञता को ट्रांसफर कर सकती हैं। भारत में भी **कई बड़े नगर संतृप्ति की दहलीज तक** पहुंच गए हैं। भविष्य मध्यप्रदेश का है।

- मध्यप्रदेश होने का गर्व, वह 'वी फीलिंग', वह 'स्टेट डिस्टिंक्टिवनेस' मध्यप्रदेश में नहीं है जो गुजराती, बंगाली, मराठी, तेलुगू या तमिल लोगों में है। हम चाहते हैं कि यह चीज पनपे। मध्यप्रदेश की पहचान और अस्मिता उभरे। शायद हमारी मूल पहचान ही यह है कि हम शुरू से ही सभी ओर से खुले हुए हैं। हर तरह के प्रभावों को हमने ग्रहण किया है। **हम हमेशा से ग्लोबल हैं। हम हमेशा से एक कॉमन मार्केट हैं**। दूसरी जगहों पर कॉमन मार्केट एक प्रोडक्ट होगा, हमारे यहां एक प्रासेस है।
- सबसे पहले मैं अपने राज्य की कमजोरियां बताना चाहूंगा। हम वह प्रदेश हैं जहां शिशु मृत्यु दर बहुत ज्यादा है। हम वह प्रदेश हैं जहां मातृ मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है। हम वह प्रदेश हैं जहां गरीबी और कुपोषण राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है। इन सब कमजोरियों के बाबत आपको कोई दूसरा बताए, इसके पहले मैं ही ये कड़वे सच आपके सामने रख रहा हूं। मैं ऐसा कर रहा हूं क्योंकि जब हम वैली में घाटी में खड़े होते हैं तब ही बड़ी चीजों, ग्रेट थिंग्स का दीदार कर पाते हैं, अन्यथा शिखर से, पीक से तो सब चीजें छोटी ही नज़र आएंगी। **बॉटम लाइन की हार्ड रियलिटी** का हमें ज्ञान है और

आपको भी करा देना चाहते हैं क्योंकि आपके साथ मिलकर ही हम इस युद्ध को जीतने की राह पर चल रहे हैं। प्रदेश की समृद्धि और सम्पदा हमारे लिए विरासत नहीं, न सही– यह हमारे लिए सृजन की चुनौती तो है।

- मुझे मालूम है कि जब हमने ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट की बात की तो आदतन संदेहवादियों ने वैश्वीकरण के बारे में तमाम किस्म के शुबहे जाहिर किए। लेकिन मेरा मानना है कि **वैश्वीकरण को शाप नहीं, शेप देने की जरूरत है।** कुछ लोगों ने कहा कि ग्लोबल के चक्कर में हम लोकल की उपेक्षा कर रहे हैं। सच तो यह है कि आज की इस मीट में भी 50 से ज्यादा मध्यप्रदेश के निवेशक हैं। इसके पहले स्वयं इसी इंदौर में, भोपाल में और ग्वालियर में मैंने स्थानीय उद्योगपतियों से सीधे चर्चा की है। मैंने प्रदेश भर के लघु उद्यमियों की पंचायत अपने निवास पर बुलाई थी। पूरे ध्यान से उनकी समस्याएं सुनी थीं और वहीं उनके हित में बहुत से निर्णय लिए थे। इसी के साथ मैंने शिल्पियों और कारीगरों के 'टाइनी' और 'माइक्रो' सेक्टर की पंचायत भी अपने घर आहूत की थी। मेरी तो शासन-शैली ही समावेशी है और इसीलिए मेरा घर, मेरा निवास आज जनता को अधिकतम उपलब्ध है। इसलिए घरेलू उद्योगों की उपेक्षा का तो सवाल ही नहीं है। लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा कि वसुधेव कुटुम्बकम

की संस्कृति वाले देश में ग्लोबल के प्रति एक आत्मविश्वास होना चाहिए। यह **मल्टीडॉमेस्टिक कंपनियों** का समय है। **हम पूरब–पच्छिम न देखें, हम आगे देखें।**

- कुछ मित्रवर यह भी कहते हैं कि हम यह ग्लोबल मीट कुछ ज्यादा ही देरी से कर रहे हैं। यह तो हमें भारतीय जनता पार्टी के शासन के पहले वर्ष ही कर लेना था, अब क्या जब एक ही वर्ष रहा गया है। ऐसे मित्रवर न हमारी सिंसिआरिटी को जानते हैं, न हमारे आत्मविश्वास को। सिंसिआरिटी इस मायने में कि निवेशकों को अपने यहां बुलाने से पहले हमने अपने आपको सुधारा। हमारे सामने **लीगेसी प्राब्लम्स थीं**- विरासत की विकृतियां। खजाना खाली था, सड़कों की स्थिति दयनीय थी, बिजली की आपूर्ति के मामले में हम शब्दशः **लालटेन युग** में थे। कल्पना कीजिए, अंधेरे में गड्ढों पर रेड कारपेट बिछाकर यदि आपको बुलाया जाए। पिछले लगभग 4 सालों में हमने लगातार विकास के मोर्चे पर एकाग्रचित्त होकर काम किया है। हमने 32000 किमी सड़कें बनाईं और बेहतर की हैं। हमने 2611 मेगावाट जेनेरेटिंग कैपेसिटी जोड़ी जबकि पूर्व के 50 वर्षों से भी अधिक समय में राज्य की जेनेरेटिंग कैपेसिटी मात्र 2990 मेगावाट थी। राज्य की अर्थव्यवस्था को बेहतर फिस्कल प्रबंधन के

जरिए हमने पुनर्जीवित किया। इस काम में वक्त लगा लेकिन हमने यह कर दिखाया।

- हमें अपना आंगन सुधारना था तो हमने पॉलिसी रिजीम को भी बदलना तय किया। हमने औद्योगिक नीति में, जो 2004 में ही बनी थी, उद्योगपतियों से मशविरा कर बहुत से परिवर्तन किए। अब मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक प्रोजेक्ट क्लीयरेंस एंड इम्प्लीमेंटेशन बोर्ड है जिसने अभी तक सवा लाख करोड़ रुपए तक के निवेशों का मार्ग प्रशस्त किया है। सिर्फ औद्योगिक नीति ही नहीं बल्कि उनके सेक्टोरल नीतियों को भी परिवर्तित किया गया है या उनके नीतिगत शून्य को खत्म किया गया है। रियल एस्टेट में एक अनुकूल वातावरण निर्मित करने के लिए नई हाउसिंग पॉलिसी आई है। गैर-वानिकी बंजर भूमि नीति, अपारंपरिक ऊर्जा स्त्रोत नीति, खनिज संसाधन नीति, खाद्य प्रसंस्करण नीति, ग्रेप प्रासेसिंग नीति जैसी बहुत सी नीतियों को पिछले एक साल में ही बनाया गया है।
- मध्यप्रदेश का स्ट्राइक और लॉक आउट रिकार्ड अच्छा होने को आप लोगों के सामने एक आकर्षण की तरह प्रस्तुत किया गया है। लेकिन मैं इसे किसी कमजोर या सुषुप्त श्रम आंदोलन का परिणाम नहीं मानता बल्कि मध्यप्रदेश के भीतर किसी भी किस्म के अतिवाद की गैरमौजूदगी का परिणाम मानता हूं। हमारे यहां जातीय कटुताएं नहीं

हैं, इसलिए जाति-संघर्ष यहां नहीं है। हमारे यहां राजनीति भी उस तरह से रैडिकलाइज़ नहीं हुई है कि जिसके चलते एक मुख्यमंत्री दूसरे को जेल में डालता है। मध्यप्रदेश मध्यमा प्रतिपदा के रास्ते पर चलता है।

- मध्यप्रदेश के आकर्षण के रूप में लो-वेज़, चीप लेबर जैसे प्रारंभिक अर्थशास्त्र को बताने की जगह मैं आपका ध्यान यहां घट रही ज्ञान और संचार क्रांति और उसके कारण यहां बढ़ रही प्रफेशनल्स की संख्या की ओर खींचना चाहूंगा। इसी कारण ई-गवर्नेंस में हमने कई उन दक्षिणी राज्यों को भी पीछे छोड़ा है जिन्होंने काफी हाइप पैदा किया था। यह ज्ञान क्रांति महत्त्वपूर्ण है। नॉलिज की खासियत ही यह है कि यह किसी भी प्रोडक्ट की तुलना में ज्यादा पोर्टेबल है। हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों से निकल रहे बच्चे नालिज सप्लाई के स्त्रोत हैं। मध्यप्रदेश का मेगाब्रेन। हम जानते हैं कि नॉलिज की शेल्फ लाइफ कम से कम होती जा रही है, इसलिए हमारे IIM, मेडीकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में लगातार आधुनिकीकरण हो रहा है।
- राज्य की उपलब्धियां सरकार मात्र की उपलब्धियां नहीं हैं। वे मध्यप्रदेश की साढ़े छः करोड़ जनता की उपलब्धियां हैं। उन्हीं की मेहनत के कारण आज हम दलहन तिलहन के उत्पादन में प्रथम हैं, उन्हीं के कारण आज हम अन्नोत्पादन में देश में तीसरे स्थान पर

पहुंच गए हैं। मध्यप्रदेश के लोगों के एंटरप्राइजिंग नेचर को जो लोग कम करके आंकते हैं, वे बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं।

- कई मित्रों को यह ग्लोबल इंवेस्टर्स मीट शासन का सर्कस शो लगता है। लेकिन हमारे लिए यह इन्डस्ट्री का **डिज्नीफिकेशन** नहीं है। हमने निवेशकों का कार्निवाल नहीं इकट्ठा किया है। न यह उत्सव है, न उत्सव धर्मिता। हमारे लिए यह एक प्लेज़ है। इसकी गरिमा को, मेरी अपील है कि किसी की कुंठाओं से प्रभावित न होने दीजिए। एक उभरते हुए मध्यप्रदेश की राह में न किसी ईर्ष्या को हम बाधा बनने देंगे, न किसी साजिश को। आज की उपस्थिति को देखकर मैं कह सकता हूं कि मध्यप्रदेश का ट्रेंड चल पड़ा है। इनवेस्टमेंट विज्डम की एक पुस्तक कहती है: 'द ट्रेंड इज़ योर फ्रेंड'। अब यह काफिला रुकेगा नहीं।
- लोग कहते हैं कि निवेश एक एक्ट ऑफ होप है-आशा के आधार पर किया जाने वाला काम। मैं मानता हूँ कि निवेश एक एक्ट ऑफ फेथ है- हमारी संनिष्ठा का न्यास, हमारा धर्म। यहां लोग सिर्फ हमारी अर्थव्यवस्था के तात्कालिक बूम के आधार पर ही नहीं चले आ रहे हैं। ऐसे बूम तो बबल या बुलबुले सिद्ध होते हैं। यहां से एक स्थाई साहचर्य की शुरुआत होती है। मध्यप्रदेश में परफार्मेंस की एक नई संस्कृति विकसित हुई है। चाहे वह रोजगार गारंटी योजना हो या

प्रधानमंत्री सड़क योजना, मध्यप्रदेश देश में प्रथम है। यही स्थिति जी डी पी ग्रोथ के मामले में है। इसलिए ये निवेश विकास की धारा के रूप हैं, **धारा के– स्ट्रीम के रूप में, किसी बबल या बुलबुले के रूप में नहीं।**

- अंत में मैं आपसे कहूंगा कि हम आपसे जजमेंट की गलतियां हो सकती हैं, मोटिव की गलतियां नहीं। शुद्ध मन से, स्वस्थ चित्त से हम आप आज इस मुकाम पर साथ आए हैं। यहां से हमारे साथ की शुरुआत है। अंत नहीं। इसलिए हमारे आपके संवाद के मौके हमेशा बने रहेंगे। चाहे जनदर्शन हो जो एक तरह की पब्लिक हियरिंग है जिसमें मैं शासन की डिलीवरी सिस्टम की मैदानी स्थिति की जांच करता हूं या मेरे निवास पर बुलाई गई पंचायतें, मैंने संवाद को ही अपने प्रशासन की मुख्य धुरी बनाया है। लोग श्रोता ही नहीं हैं ज़िंदगी के प्लेटफार्म पर हमारे सहयात्री हैं। आप भी हैं। हमारी यह यात्रा शुरू हुई है तो हम मंज़िल पर पहुंचकर ही दम लेंगे। इस यात्रा के लिए तमाम शुभकामनाएं।